Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, OCT-NOV, 2022, VOL-10/54
10.21922/srjhsel.v10i54.11799

सोशलिस्ट पार्टी का गठन में समाजवादी नेता भूपेंद्र नारायण मंडल का योगदान

माधव कुमार

शोधार्थी, राजनीतिक विज्ञान विभाग, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय लालू नगर मधेपुर

Paper Received On: 25 NOV 2022
Peer Reviewed On: 30 NOV 2022
Published On: 1 DEC 2022

Abstract

भूपेंद्र नारायण मंडल और सोशलिस्ट नेता डॉ राम मनोहर लोहिया के जाति विषय विचारों में अद्भुत एकरूपता है इसको महज संगठित एकरूपता कहना या समझना और आपर्याप्त होगा दोनों दृष्टि संपन्न राजनेता वह महज विचारों में जीने वाले लोग नहीं थे। निष्कर्ष पर पहुंचे हुए विचारों से ही उनकी जीवन दृष्ट निर्मित हुई थी।

भूपेंद्र नारायण मंडल की राजनीति सामाजिक दृष्टि के निर्माण की अपनी स्वतंत्र प्रक्रिया है उनके अपने परिस्थिति अनुभव है विस्तृत और व्यापक अध्ययन चिंतन है क्षेत्रीय राजनीति से शुरू करके वे राष्ट्रीय राजनीति का सफर काय करते हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि लोहिया जी के असामाजिक निधन के बाद भी भूपेन्द्र नारायण मंडल समाजवादी राजनीतिक की लॉव को जलाए रखते हैं। सदन में लोहिया जी के ना होने से जो खालीपन पैदा हुआ या भरसक उसकी भरपाई करने की कोशिश करते रहे अत्यंत मृदुभाषी अनुशासित मर्यादित श्रेष्ठ होते हुए भी सांसद में समाजवादी संकल्पों को लेकर आक्रामक हो जाया करते थे।

कुंजी : *समाजिक दृष्टि चिंतन राजनितिक निष्कर्ष*

Scholarly Research Journal's** is licensed Based on a work at **www.srjis.com

प्रस्तावना

भूपेंद्र नारायण मंडल के समस्त राजनीतिक चिंतन और कर्म की केंद्रीय धूरी भारतीय समाज का वह मामूली आदमी है। जिसे व्यवस्था और नियति से मिलकर

इतना असहाय बना दिया है कि वह आज न कल राष्ट्रीय चिंता बल्कि लज्जा का विषय है। उन्होंने उस मामूली आदमी को इस तरह चिन्हित किया है। ''जनता की तकलीफ को अपने हर काम के सिलसिले मे देखना चाहिए कि मेरे काम का मेरी बोली का क्या असर जनता के ऊपर पडेगा खासकर वह जनता जिसके हम गार्जियन है''। [1]

ग्रामीण क्षेत्र या शहरी क्षेत्र इसी निम्नतम स्तर पर जीनेवाले लोग को केंद्र मे रखा कर भूपेंद्र नारायण मंडल ने पंचवर्षीय योजनाओं की बजट कृषि या उद्योग नीति की ओर अन्य तमाम नीतियों की आलोचना किया। भारतीय संविधान में उल्लिखित कल्याणकारी राज्य की अवधारणा की याद वे सरकार को हमेशा दिलाते रहे।

भूपेंद्र नारायण मंडल ने शिक्षा से जुड़े हुए जिन तमाम जन संयोग और प्रश्नों को आज से लगभग 50 वर्ष पूर्व जितनी गंभीरता से सदन के सामने रखता था वह आज भी वैसे ही अनुत्तरित है कहीं कोई बदलाव नहीं हो सका है। अतिथियों पहले से कुछ सुधार हुई है उच्च शिक्षा के और तकनीकी शिक्षा के सरकारी संस्थाओं इतने कम हैं। और उन में प्रवेश की प्रक्रिया इतनी दुरुस और जटिल है कि आज भी पिछड़े ओर गरीबों को वहां पढ़ पाना बहुत कठिन है।

17 मई 1934 ईस्वी को पटना के अंजुमन इस्लामिया हॉल में आचार्य नरेंद्र देव जी की अध्यक्षता में विशाल समाजवादी सम्मेलन हुआ इस सम्मेलन में कांग्रेसी सोशलिस्ट पार्टी की नींव पड़ी सारे देश के 100 के लगभग समाजवादी पार्टी में इकट्ठे हुई थी उन्होंने तय किया कि अखिल भारतीय स्तर पर पार्टी का संगठन होना चाहिए सम्मेलन में जयप्रकाश नारायण पार्टी के महामंत्री बने उन्होंने ही सारे देश का दौरा करके संगठन को मजबूत बनाया।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

जयप्रकाश नारायण को देश के पार्टी के समाजवादी नेताओं का सहयोग मिला डॉ राम मनोहर लोहिया, आयुक्त पटवर्धन संपूर्णानंद, युसूफ मेहर अली, अशोक मेहता, मीनू समानी, कमला देवी, मुंशी आहमद उदीन जैसे अनेकों समाजवादी शतक साथी उनके काम में हाथ बताने लगे समाजवादी विचारधारा में वह विश्वास रखने वाले कई चिंतनशील लोग राष्ट्रीय आंदोलन में हिस्सा ले रहे थे।

सन 1931 में बिहार में एक समाजवादी पार्टी का गठन भी हो चुका था जिसमें रामवृक्ष बेनीपुरी, गंगा शरण सिंह, फूलन प्रसाद वर्मा, श्याम नंदन सिंह, अब्दुल बारी सिद्धकी अध्यक्ष एवं अब बोल दिया चांद जैसे लोगों की सक्रिय भूमिका थी उसी समय पंजाब तथा कुछ अन्य प्रांतों में भी सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना हुई थी लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर समाजवादियों का कोई संगठन नहीं था।

सुधांशु रंजन के शब्दों, में वैसे समाजवादी पार्टी के गठन के लिए आधारशिला नासिक जेल में ही तैयार हो चुकी थी, स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जब गिरफ्तार होकर जेसी नासिक जेल गए तो संयोगवश कई प्रतिभा और समर्पित नेता भी बंदी जिसमें प्रमुख थे डॉ राम मनोहर लोहिया, मीनू मसानि, एनजी गौर, अशोक मेहता, एवं युसूफ, मेहर अली, भूपेंद्र नारायण मंडल जैसे समाजवादियों के साथ–साथ मोरारजी देसाई और जे सी कुमारप्पा जैसे कट्टर समाजवादी भी थे नासिक जेल में बंद नेताओं में मुंबई के तहसील अधिवक्ता भोला भाई देसाई भी थे समाजवादी विचारधारा को माननीय वाले इन सभी आंदोलनकारियों में अपार स्नेह स्थापित हो गया था।

जेपी और मीनू मसानी के बीच दोस्ती और भी प्रगोध थी। इन लोगो के बीच एक समाजवादी पार्टी की स्थापना के लिए गहन विचार विमर्श होती थी।

दो सवालों पर विशेष रूप से चर्चा होती थी। की आजादी की लड़ाई को किस तरह और मजबूत तथा धारदार बनाया जाए दूसरी चर्चा यह भी की आजादी

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

के बाद स्वराज का स्वरूप कैसा है हो समाजवादी लोगों का विचार या किस समाज के कमजोर तथा आपेक्षित तबकों की आकांक्षाओं को स्वतंत्रता संग्राम के उद्देश्य से जोड़ा जाना चाहिए तभी आंदोलन का जनाधार भी व्यापक होगा वैसे देखा जाए तो कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का भी पार्टी के गठन पर प्रभाव परा था।

भारतीय जनता का संघर्ष में जैसा कहा कि '' वह समय आ गया है जबकि नए सिद्धांत के आधार पर नए तरीके से कांग्रेस का मूल्य पूर्ण गठन किया जाए'' कांग्रेस के नेतृत्व और ढांचे में परिवर्तन की इसी आकांक्षा का एक परिणाम के रूप में 1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का जन्म हुआ था जवाहरलाल नेहरू भी वामपंथी विचारधारा से बहुत प्रभावित थे इसीलिए वे खुलेआम समाजवाद को समर्थन करने लगे थे।

समाजवादी कार्यक्रम की एक रूपरेखा तैयार की थी 17 मई 1934 ईस्वी को पटना में या सम्मेलन इसीलिए आयोजित किया गया था क्योंकि पहले से बिहार में एक सोशलिस्ट पार्टी थी कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी तो कांग्रेस के अंदर ही बनी थी परंतु इसके संस्थापक कांग्रेस नेतृत्व के खिलाफ थे पटना सम्मेलन में जयप्रकाश नारायण को संगठन मंत्री नियुक्त किया गया संगठन मंत्री की हैसियत से पार्टी का प्रचार प्रसार करने के लिए पूरे देश में अलग–अलग प्रांतों में पार्टी की शाखाएं खोली थी।

अक्टूबर 1934 में संपूर्णानंद की अध्यक्षता में एक सम्मेलन हुआ जिसमें कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की विधिवत स्थापना हुई थी आचार्य नरेंद्र देव इसके अध्यक्ष और जयप्रकाश नारायण महासचिव बनाए गए थे समाजवादी पार्टी की स्थापना को कांग्रेस के बहुत से नेताओं ने पसंद नहीं किया था पठानी सीता रमैया ने 21

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

दिसंबर 1934 को सरदार पटेल को लिखे एक पत्र में समाजवादी पार्टी के संस्थापकों को स्कम कह दिया। कांग्रेस के अंदर सोशलिस्ट विचारों के लोगों की बैठक करने और कांग्रेस के अंदर एक सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना करने का प्रस्ताव संपूर्णानंद जी ने किया था उन्होंने एक समाजवादी कार्यक्रम तैयार किया और एक पत्र के साथ उसे वामपंथी तथा समाजवादी रुझान वाले कांग्रेस नेताओं के पास भेजा।

इस पत्र के आरंभ में ही अफसोस जाहिर करते हुए कहा गया था कि भारत में समाजवादियों की संख्या बहुत बड़ी है और इनमें बहुत से लोग इमानदार मार्क्सवाद थे लेकिन एक कार्यक्रम के आधार उनको संगठित करने और उनके कार्यों को संचालित करने के लिए कोई अखिल भारतीय समाजवादी पार्टी नहीं है निसंदेह भारत के बहुत से प्रदेशों में समाजवादी गुट सक्रिय है ''लेकिन अभी तक वह समाजवादी को उचित स्थान दिलाने में सफल नहीं हुए हैं अब वक्त आ गया है कि एक समाजवादी गुट का गठन किया जाए जिसका कम से कम एक महत्वपूर्ण अंश कांग्रेस के हाथ जुड़ा हो''।[4]

सदस्यों के परस्पर विचार विनियम के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि कांग्रेस सोशलिस्ट के अखिल भारतीय संगठन की स्थापना का समय आ गया है संगठन के कार्यक्रम और विधान के संबंधी को तैयार करने के लिए एक उप समिति बनाई गई जिसके अध्यक्ष आचार्य नरेंद्र देव के आव्हान पर जयप्रकाश नारायण और भूपेंद्र नारायण मंडल थे। सम्मेलन में कांग्रेस सोशलिस्ट नाम से अपना केंद्रीय मुख्य पात्र निकालने का फैसला भी किया गया।

उसने घोषित किया कि भारत के संपूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करने समाजवादी समाज की स्थापना करने का लक्ष्य रखा गया था, कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी ने खुद

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

अपने जन्म का विवरण अपने दूसरे सम्मेलन जनवरी 1936 मेरठ कि थेथिस में दिया था उसमें कहां गया कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का जन्म दो राष्ट्रीय आंदोलन के अनुभवों के गर्व से हुआ। अतः यह स्वाभाविक था कि परिस्थिति की आवश्यकता को पूरा करने के लिए जो संगठन पैदा हुआ उसने सोशलिस्ट विशेषण ग्रहण किया सोशलिस्ट शब्द के पहले जुड़ा कांग्रेस शब्द राष्ट्रीय आंदोलन के साथ सिर्फ भूत ही नहीं वर्तमान और भावी जीवित को प्रकट करता था कम्युनिस्टों का कहना था कि सोशलिस्ट पार्टी को कांग्रेस के अंदर नहीं बल्कि उसे स्वतंत्र संगठन के रूप में मजदूर वर्ग के नेतृत्व में बनाना चाहिए इसके बावजूद जब कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी बन गई तो उन्होंने उसके साथ सहयोग का रुख अपनाया था जयप्रकाश नारायण अपने विद्यार्थी जीवन में संयुक्त राज्य अमेरिका की कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य थे, भारत वापस आने पर वे हिंदुस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य नहीं बने लेकिन उनके विचारों पर मार्क्सवाद की छाप स्पष्ट थी।

यह पुस्तक उस समय बहुत चर्चित हुई थी और अनेकों लोगों को समाजवाद की तरफ आकर्षित किया था खासकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं को ध्यान में रखकर लिखी गई इस पुस्तक के आरंभ में ही स्पष्ट किया है कि समाजवाद का एक ही प्रकार है एक ही सिद्धांत है और वह मार्क्सवाद है स्पष्ट है कि जयप्रकाश नारायण भूपेंद्र नारायण मंडल जिस समाजवाद की बात कर रहे थे वह काल्पनिक समाजवाद नहीं था बल्कि वह वैज्ञानिक समाजवाद था या समाजवाद कैसे लाया जा सकता है।

उन्होंने अपनी पुस्तक में स्पष्ट लिखा है कि अभी तक केवल कम्युनिस्टों ने रूस में अपनी महान और उल्लेखनीय सफलता के द्वारा अपना कार्य नीति संबंधी सिद्धांत सही साबित किया है जो व्यक्ति दूसरे तरीकों की बातें करते रहे हैं वह हर

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

जगह असफल सिद्ध हुई है समाजवाद के बिना स्वाधीनता की जगह समाज का स्वाधीनता कायम करना ही उचित है समाजवाद के बिना स्वाधीनता अधूरी होगी स्वाधीनता के साथ–साथ आर्थिक स्वाधीनता जरूरी है और इस आर्थिक स्वाधीनता का एक ही अर्थ है समाजवाद, समाजवाद के बिना आर्थिक स्वाधीनता भिन्न प्रपंच है।

भूपेन्द्र नारायण मंडल राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व पूंजीपति वर्ग के हाथ से छीन कर मजदूर वर्ग के हाथ में लाने की जरूरत पर जोर देते रहे जहां तक कम्युनिस्टों की बात है तो 1935–36 में कम्युनिस्ट पार्टी का फैसला था कि वह खुद कांग्रेस में शामिल ना होगी अपने स्वतंत्र अस्तित्व को बनाए रखेगी लेकिन उसके सदस्य व्यक्तिगत रूप से कांग्रेस के सदस्य बनेंगे और उसके अंदर काम करेंगे वह भीतर और बाहर से इस तरह जोर लगाएंगे जिससे कि कांग्रेस के विधान में संशोधन हो जाए और मेहनत करके संगठन को कांग्रेस से संबंध होने का मौका मिल जाए इस तरह समाजवादी विचारधारा वाले सभी नेतागण एकजुट होकर बिहार में एक समाजवादी पार्टी के गठन को दिल खोलकर समर्थन किये।

संदर्भ ग्रंथ सूची

भूपेन्द्र नारायण मंडल समिति ग्रंथ संपादक मंडल श्यामल किशोर यादव पृष्ठ6–114
बूंद–बूंद सच एक सागर का, संपादक भूपेंद्र मधेपुरी, पृष्ठ–133
सदन में भूपेन्द्र नारायण मंडल, संपादक श्यामल किशोर यादव, सच्चिदानंद यादव, आलोक कुमार, पृष्ठ–25
स्वाधीनता संग्राम और समाजवादी विचारधारा संपादक डॉक्टर चंद्रलोक भारती–पृष्ठ–25
समाजिक न्याय अंबेडकर विचार और आधुनिक संदर्भ डॉ. सुधांशु शेखर–पृष्ठ 36,37
समाजवादि चिंतक के अमर साधक डॉ0 भूपेन्द्र नारायण मंडल शरदेन्दु कुमार पृष्ठ–21
जयप्रकाश नारायण एक जीवनी श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language